प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत :-

हिन्दी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, पत्र-6

यूनान के महान दार्शनिक 'प्लेटो' एक मौलिक चिन्तक के रूप में विख्यात हैं | वे सुकरात के शिष्य थे | अनेक देशों का भ्रमण कर के उन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया, उसी का उपयोग उन्होंने अपने मौलिक विचारों के प्रतिपादन में किया | प्लेटो की प्रमुख रचनाएं हैं - दि रिपब्लिक,दि स्टेट्रसमैन, दि लाज | प्लेटो के साहित्यिक विचार उसके दार्शनिक एवं राजनीतिक सिद्धांतों से पर्याप्त प्रभावित हैं |

'प्लेटो' के समय एक कवि को समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त था | वह उपदेशक, मार्गदर्शक, संस्कृति का संरक्षक माना जाता था | 'होमर' प्लेटो के समकालीन ऐसे ही कवि थे | यद्यपि होमर के प्रति प्लेटो भी आदरभाव रखते थे, किंतु वह उनके कवि कर्म को हेय दृष्टि से देखते थे |

प्लेटो साहित्य का महत्व उसी सीमा तक स्वीकार करते हैं, जहां तक एक राज्य के नागरिकों में सत्य, न्याय और सदाचार की भावना को प्रतिष्ठित करने में सहायक हो | कला और साहित्य की कसौटी उनके लिए आनंद एवं सौंदर्' न होकर उपयोगितावाद थी |वे कहते हैं कि -

"एक गोबर से भरी हुई टोकरी भी सुंदर कही जा सकती है यदि वह अपना कोई उपयोग रखती हो, अन्यथा एक स्वर्णजटित चमचमाती हुई ढ़ाल भी असुंदर है यदि वह उपयोग की दृष्टि से महत्वहीन हो |"

दुर्भाग्य से उस समय का यूनानी साहित्य कामोत्तेजक एवं भावोद्वेलन था | अतः सामाजिक हित की दृष्टि से उसका कोई उपयोग नहीं था , परिणामत: प्लेटो साहित्य के विरूद्ध मोर्चा खोलते हुए उस पर अपने आक्षेप किये |

प्लेटो का मत है कि 'काव्य' मिथ्या जगत की मिथ्या अनुकृति है | कवि या साहित्यकार जिन वस्तुओं या व्यक्तियों की अनुकृति करता है, वे पहले से ही भौतिक जगत में विद्यमान है | यह अनुकृति मिथ्या एवं भ्रामक है, क्योंकि अनुकरण कभी पूर्ण रूप से होना संभव नहीं है | जिन वस्तुओं की अनुकृति कवि प्रस्तुत करता है, उनका सत्य रूप तो केवल विचार रूप में अलौकिक जगत में ही है | ऐसी स्थिति में कवि या कलाकार तो नकल की नकल करता है | प्लेटो के विचार से कवि या कलाकार मिथ्या जगत की मिथ्या अनुकृति करता है | इस प्रकार वह सत्य से दोगुना दूर रहता है, इसलिए वह प्रशंसनीय नहीं अपितु दंडनीय है |

प्लेटो की मान्यता थी कि कवि को मनोरंजन प्रधान और अस्वस्थ मनोवेगों को उत्पन्न करने वाली कविताएं नहीं लिखनी चाहिए | बच्चे जिन कथा-कहानियों को सर्वप्रथम सुनें वे उदात्त विचारों वाले हो | सामाजिक उपादेयता एवं नैतिकता से हीन कविता का समर्थन प्लेटो नहीं करते थे | वह यह सहन नहीं कर सकते थे कि कवि देवताओं को कुटिल, पापी षड्यंत्रकारी या क्रुर रूप में चित्रित करे | काव्य को नैतिकता और उपयोगिता के मानदंड से परखने के पक्षपाती थे | काव्य, आदि ललित कलाओं को वह चिकित्सा आदि उपयोगी कलाओं से हीन मानते थे |

प्लेटो की धारणा थी कि भाव या विचार ही आधारभूत सत्य है तथा यही मूलादर्श भी है | प्रकृति में प्रत्यक्ष रुप से दिखाई देने वाली वस्तुएं उस मूलादर्श की प्रतिकृति (अनुकरण) है | वे भाव या विचार सर्वशक्तिमान जनक (ईश्वर) के मन में होंगे, इसीलिए दृश्यमान जगत उस भाव या विचार का अनुकरण है | बाह्य जगत की वस्तुओं का अंकन ही कला (काव्य) में होता है | अतः काव्य अनुकरण का अनुकरण है और मूल सत्य से दोगुना दूर है |

प्लेटो का कथन है कि कवि या चित्रकार वस्तुत: 'कृति' नहीं अपितु 'अनुकृति'

मात्र प्रस्तुत करता है, अतः वह अमौलिक एवं अज्ञानी है | वे कवि या चित्रकार का महत्व मोची से भी कम आंकते हैं, क्योंकि मोची या बढ़ई अपने द्वारा निर्मित वस्तुओं से लोगों का उपकार करते हैं, पर कवि की रचना लोगों का कोई उपकार नहीं करती | कवि या चित्रकार मोची की कला से सर्वथा अनभिज्ञ होते हुए भी उसके कार्यों को इस प्रकार चित्रित कर देगा कि सरल प्रकृति के लोग उसे वास्तविक कारीगर समझने की भूल करेंगे | इस प्रकार कवि स्वयं तो अज्ञानी है ही, साथ ही वह अज्ञान का प्रसार भी करता है | प्लेटो कविता पर तीसरा आक्षेप यह है कि कविता अनुकृति है और किसी भी दृष्टि से उपयोगी नहीं है | वह कविता और कला को समाज के लिए सर्वथा अनुपयोगी मानते हुए कवियों को चुनौती देते हुए कहते हैं कि वे सिद्ध करें कि कविता की समाज के लिए क्या उपयोगिता है ? अपने समकालीन कवि होमर से पूछना चाहते हैं कि क्या उसकी कविता किसी को रोगमुक्त कर सकती है, क्या उसकी कविता से कोई युद्ध जीता जा सकता है, या उसकी सहायता से श्रेष्ठ शासन व्यवस्था स्थापित हो सकती है ? स्पष्ट है कि कवि की तुलना में एक चिकित्सक, सैनिक या प्रशासक का महत्व वे अधिक मानते हैं |

प्लेटो के विचार से कवि अनुपयोगी एवं महत्त्वहीन तो है ही, साथ ही वह समाज में दुर्बलता एवं अनाचार के पोषण का भी अपराध करता है | किसी भी समाज में सत्य, न्याय और सदाचार की प्रतिष्ठा तभी संभव है जब उस राज्य के सभी निवासी अपनी वासनाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए विवेक एवं नीति के अनुसार आचरण करें | इसके विपरीत कवि अपनी रचना में भावनाओं एवं वासनाओं को उद्वेलित करता है जिससे विवेक का अंकुश ढ़ीला हो जाता है और व्यक्ति कुमार्ग की ओर अग्रसर हो जाता है | उनका मानना था कि कविता से हमें आनंद मिलता है, पर ऐसे आनंद से क्या लाभ जो हमें दुराचार एवं कुमार्ग की ओर प्रेरित करें | इसलिए यदि हम राज्य में सुव्यवस्था बनाए रखना चाहते हैं तो कवियों को राज्य से निकाल देना

चाहिए |

ऐसा प्रतीत होता है कि प्लेटो कविता के प्रति असहिष्णु थे | वास्तव में वे दार्शनिक एवं राजनीतिज्ञ अधिक थे | अतः कविता के प्रति न्याय नहीं कर सकें | यही कारण है कि उनकी मान्यताओं का खंडन उनके ही विद्वान शिष्य 'अरस्तु' ने किया और काव्यकला को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया |

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय